B.A. III, Geography (Hon), Sub- Population Geography, Paper-VII, Chapter- Dynamics of Population Change : Fertility.

By Dr. Ratan Kumar Jha
Head Geog. Dept.

जनसंख्या परिवर्तन की गत्यात्मकता: प्रजननता

Dynamics of Pop. Change ; Fertility

किसी देश-प्रदेश के जनसंख्या विकास के लिये प्रजननता आवश्यक ही नहीं अनिवार्य तत्व है। प्रजननता के बिना कोई भी प्रदेश जनशून्य बन जायगा। प्रजननता का अर्थ है किसी स्त्री या स्त्रियों के समूह द्वारा किसी विशेष समयावधि में कुल जन्मे सजीव बच्चों की वास्तविक संख्या। इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कुछ विद्वानों ने प्रजननता को परिभाषित किया है जिसमें निम्नलिखित प्रमुख हैं:—

बर्नार्ड बेन्जामिन के शब्दों में "प्रजननता उस दर का माप है जिसके द्वारा कोई जनसंख्या जन्मों द्वारा अपनी वृद्धि करती है तथा सामान्यतः इसका मूल्यांकन जन्मे बच्चों की संख्या को जनसंख्या के किसी वर्ग से, जैसे- विवाहित युगलों की संख्या अथवा सन्तानोत्पादन आयुवर्ग की स्त्रियों की संख्या अर्थात सम्भावित प्रजननता के किसी उपयुक्त मापदण्ड से सम्बन्धित किया जाता है।"

जॉन क्लार्क ने लिखा है "प्रजननता जीवित जन्मों की घटना है और इसका संदेह प्रजनन क्षमता से नहीं होना चाहिए जिसका सामान्य अर्थ हम पुनरुत्पादक क्षमता से लगाते हैं।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी खास अवधि में एक महिला या समूह द्वारा प्रजनित जीवित बच्चों एवं मध्य उम्र वर्ग की जनसंख्या / महिला के अनुपात को प्रजननता कहते हैं। यह अनुपात प्रति हजार में दर्शाया जाता है।

प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors affecting Fertility): विश्व में विभिन्न देशों-प्रदेशों में एक ही देश या प्रदेश के विभिन्न समुदायों में प्रजननता दर में अन्तर पाया जाता है। यह अन्तर कुछ प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कारकों के प्रभाव का परिणाम है। ऐसा पाया जाता है कि विकसित समाज या राष्ट्र में प्रजननता दर अविकसित समाज या राष्ट्र से कम होता है। इसी तरह शिक्षित समुदायों में अशिक्षित या कम शिक्षित समुदायों की तुलना में प्रजननता दर निम्न पाया जाता है। इस प्रजननता को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक जैविक एवं सामाजिक व सांस्कृतिक तत्व हैं :—

(1) जैविक तत्व : (Biological Factors) इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ जैसे- गंभीर बीमारियाँ, बांझपन, गुप्त रोग आदि आते हैं जो प्रजनन क्षमता को प्रभावित करते हैं। यह समस्या सम्बन्धित क्षेत्र या देश में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्भराधीन होता है। अतः विकसित राष्ट्र में ये सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध होती हैं, जबकि गरीब पिछड़े समाज या देश में पूर्ण सुविधा उपलब्ध होना कठिन होता है जिसका प्रभाव प्रजननता पर पड़ता है।

(2) सामाजिक तत्वों में निम्न प्रमुख हैं :—

(i) अप्रत्यक्ष तत्व :- ये तत्व सामाजिक रीति रिवाजों के कारण विभिन्न रूप से प्रजननता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। इनमें प्रमुख - विवाह की आयु, तलाक, बहुपत्नी प्रथा, प्रसवोपरान्त पति पत्नी के अलगाव की समयावधि आदि प्रमुख हैं जो अलग-अलग समुदायों में अलग-अलग किस्म के मिलते हैं। अतः विभिन्न समुदायों में प्रजननता दर भिन्न होते हैं।

(ii) प्रत्यक्ष तत्व/कारक :- इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से मानव समुदाय या राष्ट्र द्वारा जनसंख्या नियंत्रण

सम्बन्धी तथ्य आते हैं। शिशु दर व जनसंख्या नियंत्रण सम्बन्धी विभिन्न योजनाएँ चलाती हैं। इसके तहत लागू योजनाएँ किसी राष्ट्र मे विभिन्न समुदायों पर अलग-अलग प्रभाव डालता है। (जैसे) विकसित व शिक्षित समुदायों मे इन योजनाओं को फलीभूत होते पाया जाता है परन्तु उसी राष्ट्र के गरीब व पिछड़े समुदायों मे इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है जिस कारण प्रजननता मे अन्तर पाया जाता है।

प्रजननता दर निर्धारण की विधियाँ :- प्रजननता दर के निर्धारण हेतु अलग-अलग विद्वानों ने अपने मत प्रकट किये हैं जिसमें बहुत असमानताएँ हैं। कुछ ने प्रजननता अनुपात निर्धारण हेतु सम्पूर्ण जनसंख्या को आधार माना है तो कुछ ने सिर्फ प्रजनन क्षमता वाले मध्य आयु वर्ग को तो कुछ ने सिर्फ स्त्रियों की संख्या को आधार माना है। इन विधियों मे कुछ प्रमुख विधियाँ निम्न प्रकार हैं :-

(1) प्रजनन अनुपात - यह सबसे अधिक उपयुक्त एवं प्रचलित विधि है इसमें 5 वर्ष उम्र के सारे बच्चों का सिर्फ मध्य आयु वर्ग के स्त्रियों के साथ अनुपात निकाला जाता है। इसे शिशु-स्त्री अनुपात भी कहते हैं। यह अनुपात प्रति हजार स्त्रियों पर दर्शाया जाता है।

$$\text{शिशु - प्रजनन अनुपात} = \frac{\text{पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे की संख्या}}{\text{प्रजनन आयु-वर्ग के स्त्रियों की संख्या}} \times 1000$$

(2) अशोधित जन्म दर !- इस विधि में अनुपात निकालने के लिये मध्य उम्र वर्ग के कुल जनसंख्या को आधार माना जाता है। अतः इसमें पुरुषों की भी गणना हो जाती है अतः यह अधिक उपयुक्त नहीं माना जा सकता। इस अनुपात को निकालने की विधि - एक वर्ष में जन्मे कुल बच्चों की संख्या को उस वर्ष के मध्य आयुवर्ग के कुल जनसंख्या

5

से भाग देकर पुनः 1000 से गुणा किया जाता है।

(3) सामान्य प्रजनन दर :- यह विधि अशोधित विधि का संशोधित रूप है जिसमें केवल प्रजनन क्षमता वाले स्त्रियों को सम्मिलित किया जाता है।

सूत्र — सामान्य प्रजनन दर = $\frac{\text{एक वर्ष में जन्मे सजीव बच्चों की संख्या}}{\text{उस वर्ष के मध्य आयुवर्ग की स्त्रियों की संख्या}} \times 1000$

(4) आयु विशिष्ट प्रजनन दर :— इस विधि से प्रजनन दर ज्ञात करने के लिये प्रजनन आयुवर्ग के स्त्रियों को विभिन्न आयुवर्ग में विभाजित कर अनुपात निकाला जाता है। यह सामान्य पिता अथवा माता की संख्या के आधार पर की जाती है। यह विधि भी बहुत समीचीन नहीं है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विधियां भी है जिसमें संचयी प्रजनन दर, कुल प्रजनन दर, शुद्ध प्रजनन दर, मानक प्रजनन दर आदि सम्मिलित है।

(नन्द किशोर मण्डल)